सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान में कार्य कारण का भेद

सम्यक् साथै ज्ञान होय, पै भिन्न अराधौ,
लक्षण श्रध्दा जान, दुहू में भेद अबाधौ ।
सम्यक् कारण जान, ज्ञान कारज है सोई,
युगपत् होते हूँ, प्रकाश दीपकतें होई ॥ १ ॥

अन्वयार्थ् - (सम्यक् साथै ज्ञान होय) सम्यग्दर्शन के साथ ही सम्यग्ज्ञान होता है (पै) फिर भी (भिन्न अराधौ) सम्यग्ज्ञान की विवेचना पृथक की है, (श्रध्दा लक्षण जान) श्रध्दा और ज्ञान दोनो का लक्षण है (दुहु में भेद अबाधौ) दोनों में भेद परस्पर बाधा से रहित है । (सम्यक् कारण जान) सम्यग्दर्शन कारण है (ज्ञान कारज है सोई) सम्यग्ज्ञान उसका कार्य है । (युगपत् होते हूँ) एक साथ होने पर भी (प्रकाश दीपकतें होई) दीपक और प्रकाश की तरह भिन्नता है ।

भावार्थ - जिस प्रकार लोक में देखा जाता है कि प्रकाश सुर्य के उदय से भिन्न नहीं है, उसी प्रकार वस्तु स्वरुप की आस्थ्ा के साथ जिस समय सम्यग्दर्शन रुपी सुर्य

का उदय होता है, उसी समय सम्यग्ज्ञान रुपी प्रकाश का प्रादुर्भाव होता है फिर भी कार्य कारण या संज्ञा को अपेक्षा दर्शन और ज्ञान की विवेचना भिन्न रुप से की है । अर्थात सम्यग्दर्शन कारण और सम्यग्ज्ञान कार्य हुआ ।

सम्यग्दर्शन का लक्षण सत् श्रध्दान और सम्यग्ज्ञान का लक्षण सत् रुप जानना है । दर्शन और ज्ञान के ये दोनों भेद परस्पर विवाद और बाधा से रहित है । सम्यग्दर्शन कारण है और सम्यग्ज्ञान कार्य है । यद्यपि सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान इन दोनों गुणों की उत्पत्ति एक समय में ही होती है परन्तु जैसे लोक में यह कहा जाता है कि प्रकाश दीपक से हुआ है, इसी प्रकार यहां पर सम्यग्दर्शन के बाद सम्यग्ज्ञान की विवेचना की गई है ।

प्रश्न १. सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान दोनो एक ही है क्या ?
उत्तर - सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान एक साथ् में उत्पन्न होते है, परन्तु अपने-अपने लक्षण या गुणों की अपेक्षा दोनों भिन्न भिन्न है । सम्यग्दर्शन कारण है और सम्यग्ज्ञान कार्य है ।

प्रश्न २. सम्यग्ज्ञान को सम्यग्दर्शन के उपरान्त सेवन करने को क्यों कहा ?
उत्तर - सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति के बाद ही ज्ञान में सम्यक् पना आता है , अत:
सम्यग्दर्शन के अनन्तर ही ज्ञान स्व-पर प्रकाशक बनता है ।

प्रश्न ३. क्या सम्यग्दर्शन के पूर्व जीव के ज्ञान नहीं होता ?
उत्तर - सम्यग्दर्शन से पूर्व ज्ञान तो प्रत्येक जीव के रहता है । यहां तक कि सुक्ष्म निगोदिया जीवों में भ्ी मन: पर्याय नाम का ज्ञान रहता हे, परन्तू सम्यग्दर्शन से पूर्व जीव के सामान्य ज्ञान ही पाया जाता है, मोक्षमार्ग में जिसका कोई महत्व नहीं है ।

प्रश्न ४. क्या सम्यग्ज्ञान सम्यग्दर्शन से पूर्व नहीं हो सकता ?
उत्तर - वस्तु स्वरुप के यथार्थ् श्रध्दान के बिना यथार्थ ज्ञान असम्भव है अत: सम्यग्दर्शन से पूर्व सम्यग्ज्ञान किसी भी प्रकार नहीं हो सकता। वास्तविकता तो यह है कि दर्शन और ज्ञान दोनो में समीचीनता एक समय में ही आती है। दीपक और प्रकाश की तरह , मात्र अपेक्ष से क्रम वर्णित है।

प्रश्न ५. लक्षण किसे कहते है ?
उत्तर - जिससे वस्तु की पहिचानउ होती है उसे लक्षण कहते है।

प्रश्न ६. कारण किसे कहते है ?
उत्तर - हेतु अर्थात जिसकेद्वारा कार्य हो उसे कारण कहते है।

प्रश्न ७. कार्य किसे कहते है ?
उत्तर - उद्देश्य की पूर्ति को कार्य कहते है।

ज्ञान के भेद, परिक्ष और प्रत्यक्ष का लक्षण

तास भेद दो है परोक्ष, परतछि तिन माहीं।
मति श्रुत दोय परोक्ष, अक्ष मनतै उपजाही ॥
अवधि ज्ञान मन पर्जय, दो है देश - प्रतच्छा।
द्रव्य ।ित्र परिमाण लिये, जाने जिय स्वच्छा ॥ २ ॥

अन्वयार्थ - (तास भेद दो है) उस सम्यग्ज्ञान के दो भेद है (परोक्ष प्रत्यक्ष) उनमें से एक परोक्ष और दुसरा प्रत्यक्ष (तिनमॉहि) सम्यग्ज्ञान में (मतिश्रुति दोय परोक्ष) मतिज्ञान श्रुतज्ञान ये दोनों परोक्ष ज्ञान है। (अक्ष मन तै उपजाहिं) इन्द्रिय और मन की
सहायता से मतिज्ञान और श्रुतज्ञान पदार्थो को जानते है। (अवधि ज्ञान मन पर्जय) अवधि ज्ञान मन पर्यायज्ञान (दो है देश प्रतच्छा) यह दोनों एक देश प्रत्यक्ष है (द्रव्य ।ित्र परिमाण लिये) द्रव्य ।ित्र के परिमाण को लिए हुये (जिय स्वच्छा जाने) अवधि, मन पर्यय ज्ञानी जीव स्पष्ट रुप से जानता है।

भावार्थ - ज्ञान आत्मा का अभिन्न विशेष गुण है। इस ज्ञान गुण के पर्याय रुप से पांच भेद आगम में प्रतिपादित है। मति, श्रुत, अवधि , मन: पर्यय और केवलज्ञान। ये पांचो सम्यक्रुप से वस्तु स्वरुप को जानने मै प्रमाण है इनमें प्रथम मतिज्ञान, श्रुतज्ञान परीक्ष प्रमाण है। ये इन्द्रिय तथा मन की साहाता से पदार्थो को जानते है अवधिज्ञान और मन:पर्यय ज्ञान एक देश प्रत्यक्ष ज्ञान है द्रव्यक्षेत्र काल भाव की मर्यादा को लिये हुए ये दोनों ज्ञान रुपी पदार्थ् को स्पष्ट रुप से जानते है।

प्रश्न १. ज्ञान किसे कहते है ?
उत्तर - किसी भी वस्तु के जानने को ज्ञान कहते है।

प्रश्न २. ज्ञान के कितने भेद है ?

उत्तर - वास्तव में ज्ञान अखण्ड एक ही है परन्तु उसके प्रत्यक्ष, परोक्ष की अपेक्षा से दो भेद किये है एवं सज्ञा और निमित्त की अपेक्षा से मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन: पर्यय ज्ञान और केवलज्ञान की अपेक्षा पांच भेद है।

प्रश्न ३. परोक्ष ज्ञान किसे कहते है ?

उत्तर - मन और इन्द्रिय की सहायता से जो ज्ञान पदार्थो को जाने उसे परोक्ष ज्ञान कहते है।

प्रश्न ४. परोक्ष ज्ञान कौन- कौन से है ?

उत्तर - मतिज्ञान, श्रुतज्ञान परोक्ष ज्ञान है।

प्रश्न ५. एक देश प्रत्यक्ष ज्ञान किसे कहते है ?

उत्तर - द्रव्य , ।ोत्र, काल, भाव की मर्यादा लिए हुए जो रुपी पदार्थ को स्पष्ट रुप से जानता है उसे एक देश प्रत्यक्ष ज्ञान कहते है।

प्रश्न ६. सकल प्रत्यक्ष ज्ञान किसे कहते है ?

उत्तर - रुपी, अरुपी सभी पदार्थो का परिपूर्ण जानना सकल प्रत्यक्ष ज्ञान है।

प्रश्न ७. एक देश प्रत्यक्ष ज्ञान कौन-कौन से है ?

उत्तर - अवधि ज्ञान, मन: पर्यय ज्ञान एक देश प्रत्यक्ष ज्ञान है।

प्रश्न ८. सकल प्रत्यक्ष ज्ञान किसे कहते है ?

उत्तर -केवलज्ञान को सकल प्रत्यक्ष कहते है।

प्रत्यक्ष ज्ञान की महिमा

सकल द्रव्य के गुण अनन्त, परजाय अनन्ता।
जानै एकैकाल, प्रगट केवलि भगवन्ता ॥
ज्ञान समान न आन, जगत में सुख को कारन।
इहि परमामृत जन्म जरा मृतु-रोग निवारन ॥ ३ ॥

अन्वयार्थ - (सकल द्रव्य के गुन अनन्त) समस्त द्रव्यों के अनन्त गुण है (परजाय अनन्ता) अनन्त पर्याय है (एकैकाल)एक समय में ही (प्रगट) स्पष्ट रुप से (केवल भगवन्ता जानै) केवली भगवान जानते है (ज्ञान समान न आन जगत में सुख को कारण) ज्ञान के समान अन्य कोई विश्व में सुख का कारण नहीं है। (इहि परमामृत) यह ज्ञान सर्व श्रेष्ठ अमृत है (जन्म जरा मृतु रोग निवारण) जन्म-जरा और मृत्यु रुपी रोगों को विनष्ट करने वाला है।

भावार्थ - जीव पुद्गल धर्म अधर्म आकाश काल यह छहों द्रव्य परिपुर्ण रुप से व्याप्त है , इसलिए द्रव्यों के समूह हो ही लोक कहते है। सभी द्रव्यों के अनन्त गुण है और गुणों की अनन्तानन्त पर्याय है। छद्मस्थ ज्ञानी उन सभी द्रव्यों के अनन्त गुण और पर्यायों को पूर्ण रुप से जानने में सक्षम नही है। सर्वज्ञ वीतरागी हितोपदेशी केवलज्ञानी भगवान समस्त द्रव्यों के साथ-साथ उनके अनन्त गुण और पर्यायों को एक ही समय में स्पष्ट रुप से जानते है या यह भी कहा जा सकता है कि केवलो भगवान के जानने देखने का विकल्प पुर्णत: समाप्त है। अत: उनका ज्ञान स्फटिक से भी निर्मल हो चुका है,इसलिए सारे विश्व के पदार्थ उनके ज्ञान में दर्पणवत् स्वयं प्रतिबिम्बित होते है, ज्ञान के विषय बनते है, ज्ञेय बनते है।

अनादि काल से यह प्राणी सुख के साधन जुटाने में अहर्निश प्रयत्नशील है, परन्तु आज तक सच्चे सुख की अनुभूति करणे में विफल रहा है, क्योंकी आचार्यो ने सच्चे सुख का कारण ज्ञान बताया है और अभी तक प्रयत्न चलता रहा है। कि सुख की प्राप्ति विषय वासनाओं की पूर्ति से संभव है। यह निराधार भ्रम है। ज्ञान से बढकर विश्व में अन्य पदार्थ सुख का कारण नहीं है। यह ज्ञान परम अमृत स्वरुप है और यही जन्म, जरा, मृत्यु जैसे भयंकर रोगों की परिसमाप्ति करने वाला है।

प्रश्न १. द्रव्य किसे कहते है ?

उत्तर - परिणमन शील गुण एवं पर्यायों की अभिन्नता को द्रव्य कहते है।

प्रश्न २. गुण किसे कहते है ?

उत्तर - अपनी अपनली विशेषताओं को लिये हुए जो द्रव्य में अभिन्न रुप से रहते है उन्हें गुण कहते है।

प्रश्न ३. पर्याय किसे कहते है ?

उत्तर - गुणों के कार्य को पर्याय कहते है।

प्रश्न ४. क्या द्रव्य गुण, पर्याय अलग अलग है ?

उत्तर - शुध्द निश्चय नय से द्रव्य गुण पर्याय का विकल्प नहीं है मात्र अखण्ड सत् हे, परन्तु व्यवहार नय से अखण्ड द्रव्य में गुण पर्याय की विवेचना की जाती है।

प्रश्न ५. केवली भगवान तो वीतरागी है वह अनन्त द्रव्य गुण पर्यायें को कैसे जानते है ?

उत्तर - अनन्त द्रव्य गुण पर्यायों को जानने का विकल्प केवली भगवान के हे ही नहीं। जिस प्रकार दर्पण के समक्ष जों पदार्थ होते है वह स्वयमेव दर्पण में प्रतिबिम्बित होते है, उसी प्रकार केवली भगवान के ज्ञान दर्पण में चराचर समस्त पदार्थ स्वयमेव प्रतिबिम्बित होते है।

प्रश्न ६. क्या केवली भगवान का ज्ञान सारे लोक में व्याप्त है ?

उत्तर - लोक में जितने ज्ञेय है उन सबको जानने की अपेक्षा ज्ञप्ति शक्ति से ज्ञेयों के बराबर ही केवली भगवान का ज्ञान है, इसलिये सभी पदार्थ केवली भगवान के ज्ञान का विषय सहज में बन जाते है।

प्रश्न ७. ज्ञान से बढकर अन्य कोई सुख का कारण क्यों नहीं ?

उत्तर - ज्ञान हेयोपादय पदार्थो को बताकर मोक्ष सुख को प्राप्त कराने वाला है , इसलिये सर्वश्रेष्ठ सुख का कारण ज्ञान है ।

प्रश्न ८. ज्ञान केबिना जन्म, जरा, मृत्यू रोग नष्ट हो सकते है क्या ?

उत्तर - जन्म, जरा, मृत्यू आदि रोगों को मुलत: समाप्त करने केलिए सम्यग्ज्ञान ही औषधि है । बिना सम्यग्यज्ञान केचारित्र कार्यकारी नहीं है । अत: सम्यग्ज्ञान केचारित्र कार्यकारी नहीं है । अत: सम्यग्ज्ञान केअभाव में जीवन निरर्थक ही हेा

त्रिगुप्ति युक्त आत्म ज्ञान की महिमा

कोटि जन्म तप तपै, ज्ञान बिन कर्म झरें जे ।
ज्ञानी केछिन माहिं, त्रिगुप्तितै सहज टरै ते ॥
मुनिव्रत धार अनन्त बार, ग्रीवक उपजायो ।
पै निज आतम ज्ञान बिना, सुख लेश न पायो ॥ ४ ॥

अन्वयार्थ - (कोटि जन्म तप तपै) करोडो जन्मा` तक तपस्या करने पर भी (ज्ञान बिन कर्म झरें जें) ज्ञान केबिना जो कर्म झरते है (ज्ञानी केछिनमांहि) ज्ञानी मुनिराज के।ाण मात्र में ही (त्रिगुप्ति तें) मन, वचन, काय तीनों की एकाग्रता से (सहज टरै ते) उतने कर्म आससानी से झर जाते है (मुनि व्रत धार) मुनिराज केपालन योग्य महाव्रतें को धारण करके (अनन्त बार ग्रीवक उपजायेा) अनन्त बार सालह स्वर्ग से ऊपर नव ग्रैवेयकों में उत्पन्न हुआ (पै) फिर भी (निज आतम ज्ञान बिना) शुध्दात्मा केज्ञान बिना (लेश सुख न पायो) लेश मात्र भी सुख प्राप्त नहीं किया ।

.१२५.

भावार्थ - ख्याती लाभ की चाह में डुबे हुये संसार में अगणित अज्ञानी आत्मा कायक्लेश मात्र अज्ञान तपों की मोक्ष का कारण मानकर निरन्तर तपते चले जा रहे है , किन्तु वास्तविक तपों केअभाव में कर्मो की निर्जरा सम्यक्रुप से संभव नहीं है । करोंडो जन्म तपस्या करने पर भी बिना सम्यग्ज्ञान केजितने कर्मो की निर्जरा होती है, उतने कर्मो की पिर्जरा सम्यग्ज्ञान केसाथ तीन गुप्ति पूर्वक ।ाण मात्र में होती है ।

अज्ञान के साथ महाव्रतों को धारण और पालन करकेअनेकों बार ग्रैवेयक तक की ऊचाइयों को प्राप्त कर लेने के उपरान्त भी निज शुध्दात्म ज्ञान के अभाव में सच्चे सुख की अनुभूति करने में विफल रहा । स्वर्ग और ग्रैवयकों केइन्द्रिय जन्य सुख सम्यग्ज्ञान केअभाव से सुखाभास ही है । ज्ञानी आत्मा स्वर्ग और ग्रैवेयक तोक्या सर्वार्थसिध्दि के सुखों से भी सन्तुष्ट नहीं है । शान्ति की लहर इन्द्रिय जन्य भागों में कहॉ ? ज्ञानी तो स्वात्मानुभूति का रसिक होता है ।

प्रश्न १. ऐसे किसी मुनि का नाम बताइये जिसने करोडों जन्म तपस्या की हो ?

उत्तर - करोडों जन्म तपस्या करने वाले किसी मुनि का नाम आगम में नहीं है। अधिक से अधिक इकतीस बार मुनि बनकेतपस्या की जा सकती है, बत्तीसवी बार नियम से मोक्ष जायेगा ही जायेगा।

प्रश्न २. करोडों जन्म तपस्या करने वाली बात झुठी है क्या ?
उत्तर - करोडों जन्मतपस्या करने वाली बात झुठी नहीं है। अभव्य मिथ्यादृष्टि अज्ञानी की अपेक्षा सम्यग्ज्ञान का महत्व दर्शाने केलिये ग्रन्थकार ने यह बात लिखी है।

.१२६.

प्रश्न ३. तपस्या मात्र से निर्जरा संभव है क्या ?
उत्तर - सम्यग्ज्ञान केअभाव में तपस्या मात्र से संवर पूर्वक निर्जरा नहीं होती, जो भी अकाम निर्जरा होती है वह कालान्तर में संसार वर्धक है।

प्रश्न ४. निर्जरा ज्ञानी केहोती है क्या ?
उत्तर - मोक्षपुरी में पहुचाने वाली निर्जरा ज्ञानी मुनिराजों केही होती है।

प्रश्न ५. संवर पूर्वक निर्जरा मुनिराजों केही क्यों होती है ?
उत्तर - ज्ञावक अवस्था में मन, वचन, काय तीनों योगों की एकाग्रता परिपूर्ण संभव नहीं है। मूनि दशा में महाव्रतों के साथ तीनों गुप्तियों की एकाग्रता से अन्तमुहूर्त में ही अनन्त जन्मों संचित कर्मो की निर्जरा हो जाती है।

प्रश्न ६. आत्मज्ञान केअभाव में कौन-कौन मूनि ग्रैवेयक गये है ?
उत्तर - आत्मज्ञान केअभा।व में मात्र तपउ से ग्रैवेयक गये हों ऐसे किन्हीं मुनिराज का नाम शास्त्रो में नहीं आया है।

प्रश्न ७. मुनि पद अधिक से अध्धिक ३२ बार धारण किया जा सकता है, तो अनन्त बार ग्रैवेयक जाना कैसे संभव है ?
उत्तर - मुनिव्रत और मुनिपद में जमीन आसमान का अन्तर है। मुनिपद अर्थात प्रत्याख्यान कषाय केअभाव में छठवां सातवां गुणस्थान आदि तथा मुनिव्रत मात्र महा्व्रतों का पालन अर्थात मुनिराजों केव्रत मात्र का पालन करने वाला ३२ से अधिक बार भी मुनी बनकर ग्रैवेयक जा सकता है। मुलत: बात आत्म ज्ञान का महत्व बताने केलिए है। है।

.१२७.

प्रश्न ८. आत्म ज्ञान केबिना सुख नही मि ल सकता क्या ?
उत्तर - मुनिव्रत अंगीकार करने पर भी आत्मज्ञान केअभाव में निजान्द।नउसंभव नहीं है। ऐसा आत्मा मात्र ख्याति लाभ या स्वर्ग सुखों को ही प्राप्त करकेआनन्दित होता है।

प्रश्न ९. ज्ञान केसाथ त्रिगुप्ति को क्यों लिया है ?
उत्तर -कर्मो की निर्जरा अकेले ज्ञान से नहीं होती है। ज्ञान केसाथ् में चारित्र की निर्मलता होने पर ही कर्मो की निर्जरा होती है। त्रिगुप्ति शब्द सम्यक्चारित्र का प्रतीक है।

निर्दोष ज्ञान और मनुष्य पर्याय की दुर्बलता

तातै जिनवर कथित तत्व, अभ्यास करीजै।
संशय विभ्रम मोह त्याग, आपो लख लीजै ॥
यह मानुष पर्याय सुकुल, सुनिवो जिनवानी।
इह विधि गये न मिलै सुमणि, ज्यों उदधि समानी ॥ ५ ॥

अन्वयार्थ - (तातै जिनवर कथित) इसलिये जिनेन्द्र भगवान द्वारा प्रतिपादित (तत्व अभ्यास करीजै) जीवादि तत्वों का अभ्यास, मनन करना चाहीये (संशय विभ्रम मोह त्याग) सन्देह, विपर्यय, अनध्यवसाय को त्याग कर (आपो लख लीजे) अपने शुध्दात्म स्वरुप की पहचान करो (यह मानुष पर्याय) यह मनुष्य पर्याय (सुकुल) मोक्ष प्राप्ति में वाहय साधक उत्तम कुल (जिनवानी सुनिवों) और वीतराग प्रभु की सच्ची वाणी का श्रवण (इह विधि गये न मिलै) से तीनों यदि हाथ् से निकल गए तो फिर इनका मिलना इस प्रकार से दुर्लभ है (सुमणि ज्यों उदधि समानी) जैसे-अच्छा रत्न समुद्र में खो जाने केबाद पुन:मिलना दुर्लभ है।

.१२८.

भावार्थ - एकान्तवादी आज्ञानी मिथ्या मान्यता वालों की वाणी का अनुसरण करके अनन्त्भव भवान्तरों से चार गतियों की चौरासी लाख योनियों में अपना परिभ्रमण आज तक होता आ रहा है। अत: संसार सागर से पार होना है तो सर्वज्ञ, वीतरागी, हितोपदेशी जिनेन्द्र भगवान द्वारा प्रतिपादित जीवादि सात तत्वों को ज्ञेय,हेय, उपादेय, ध्येय रुप से अभ्यास करते हुये संशय, पिर्यय और अनध्यवसाय आदि विपरीत मान्यताओं को परिसमाप्ति कर निज शुध्दात्म स्वरुप की प्राप्ति में संलग्न हो जाओ।

सभी पर्यायों में श्रेष्ठ मनुष्य पर्याय, उसमें भी श्रेष्ठतम मोक्षमार्ग के हेतु लोक प्रशंसनीय उत्तम कुल की प्राप्ति अत्यन्त कठिन है । उत्तम कुल से भी श्रेष्ठतर जिनेन्द्र भगवान की यथार्थ वाणी का सुनना दु:साध्य है। जैसे- अत्यन्त परिश्रम केबाद समुद्र से प्राप्त किया हुआ रत्न पुन: समुद्र में विलय हो जाने केबाद मिमलना अत्यन्त कठिन है, ठीक उसी प्रकार मनुष्य पर्याय उत्तम कुल जिनवाणी का श्रवण छूट जाने केबाद पुन: प्राप्त हो जाना अत्यन्त कठिन है।

प्रश्न १. जिनेंन्द्र भगवान द्वारा प्रतिपादित तत्वों केअभ्यास से क्या लाभ् है ?
उत्तर - रागी द्वेषी जीवों द्वारा प्रतिपादित तत्वोपदेश, सच्चा उपदेश नही` होता, वह तो कहीं भी अपनी कषाय की पुष्टि कर सकते है किन्तु, वीतरागी भगवान को किसी से राग-द्वेष नहीं है, इसलिये उनकेद्वारा प्रतिपादित वस्तु स्वरुप ही अभ्यास योग्य सच्चे सुख का कारण है।

प्रश्न २. संशय, विभ्रम, मोह से क्या हानि है ?

.१२९.

उत्तर - संशय,विभ्रम, मोह युक्त प्राणी को यथार्थ वस्तु स्वरुप समझ में नहीं आता और वस्तु स्वरुप को समझे् बिना संसार दु:खों से पार होना संभव नही है।

प्रश्न ३. संशय किसे कहते है ?
उत्तर - वस्तु स्वरुप में संन्देह करने को (यह ऐसा है या नहीं) संशय कहते है।

प्रश्न ४. विभ्रम किसे कहते है ?
उत्तर - विपर्याय अर्थात उल्टे ज्ञान को विभ्रम कहते है। जैसे ज्ञसीप को चांदी जानना।

प्रश्न ५. मोह किसे कहते है ?
उत्तर - अनध्यवसाय अर्थात राग, द्वेष एवं कषाय केवशीभूत होकर हिताहित, विवेक शून्यता और पर में एकत्व बुध्दि को मोह कहते है।

प्रश्न ६. संशय, विभ्रम, मोह केसद्भाव में स्व संवेदना होता है क्या ?
उत्तर - संशय, विभ्रम, मोह केत्याग में इन्द्रिय जन्य विषयों का संवेदना ही स्व संवेदन वत् प्रतीत होता है, यद्यिपि स्वसंवेदन, आत्मानुभूति विपर्यय ज्ञान केसाथ में कदापि संभव नहीं है।

प्रश्न ७. मनुष्य आदि सभी पर्यायें समान हैं क्या ?
उत्तर - सभी पर्यायों में मनुष्य पर्याय ही श्रेष्ठ है क्योकी अन्य पर्याय से यथार्थ सुख की प्राप्ति नहीं होती।

प्रश्न ८. उत्तम कुल प्राप्ति से क्या लाभ है ?

उत्तर - उत्तम कुल केबिना उत्तम गुणों क विकास संभव नहीं है। उत्तम कुल वहीं है जिसमें सदाचार, अणुव्रत, महाव्रत आदि केसाथ मोक्ष मार्ग का अनुसरण किया जाय।

प्रश्न ९. जिनवाणी श्रवण से क्या लाभ है ?
उत्तर - जिनवाणी सुने बिना हमें निज पर का ज्ञान संभव नहीं है, क्यों की हम छदमस्थ है। जिनेन्द्र भगवान ने लोक में अवस्थित सभी पदार्थो की जानकर मोक्ष मार्ग का जो उपदेश दिया है, उसे श्रवण किये बिना मोक्ष मार्ग पर चलाना संभव नहीं है। अत: जिनवाणी का श्रवण , मनन जीवन में अत्यन्त आवश्यक है।

प्रश्न १०. इह बिधि गये न मिलै सुमणि ऐसा क्यों कहा ?
उत्तर - मनुष्य पर्याय की दुर्लभता बताने केलिये यह दृष्टान्त दिया है। जिस प्रकार रत्न समुद्र में गिर जाने पर पुन: सहज उपलब्धि संभव नहीं है , ठीक उसी प्रकार विषय वासनाओं में मानव पर्याय की परिसमाप्ति हो जाने केबाद पुन: सहज सुलभ नहीं है।

सम्यग्ज्ञान की महिमा

धन समान गज बाज, राज तो काज न आवै।
ज्ञान आपको रुप भये, फिर अचल रहावै ॥
तास ज्ञान को कारन, स्व पर विवेक बखानौ।
कोटि उपाय बनाय, भव्य ताको उर आनौ ॥ ६ ॥

अन्वयार्थ - (धन समाज) सम्पत्ति और कुटुम्बी आदि (गज बाज) हाथी घोडा (राज)वैभव (तो काज न आवै) यह सभी मोक्ष मार्ग में काम आने वाले नहीं है

.१३१.

(ज्ञान आपको रुप भये) अगर आत्म स्वरुप सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति हो जय तो (फिर अचल रहावे) फिर (वह सम्यग्ज्ञान केवल ज्ञान प्राप्ति तक) स्थिर रुप से साथी है (तास ज्ञान को कारण) उस सम्यग्ज्ञान प्राप्ति का कारण (स्व पर विवेक वखानो) निज-पर विवेक भेद विज्ञान कहा गया है ।(कोटि उपाय बनाय) करोडो उपाय करकेभी (भव्य ताको उर आनो) हे भव्य जीवो ! सम्यग्ज्ञान को हृदय में धारण करो ।

भावार्थ - भौतिकता की चकाचौंध में आज हर मानव धन कमाने को सर्वत्र दौड रहा है । देश -विदेश , दिन-रात- नीति-अनीति सभी को एक कर दिया है । पैसा आता देखकर सुख की एक सांस लेता है, परन्ततु दुसरे ही ।ण तृष्णा भडक उठती है और हजार पति को लखपति बनने की, लखपती को करोडपति बनने को आकुलीत कर देती है । लाखों और करोडों की तो क्या अरबों की धन राशि भी मानव जीवन में शान्ति उत्पन्न कराने में सक्षम नही है । समय पडने पर पैसा, समाज, कुटुम्बी, नौकर, चाकर, हाथी , घोडा, राज्य , वैभव कुछभी काम आने वाला नही है । मुटटी बांधकर आने वाला हाथ पसारे चजा जाता है । सारे विश्व में कोई भी सच्चा संगा साथी नहीं है सिवाय सम्यग्ज्ञान के।

सम्यग्ज्ञान साथ मे रहे तो जीवन भर शाश्वत अनन्त काल तक सच्ची सुख शान्ति की तरंगे उत्पन्न करता रहेगा । यह सम्यग्ज्ञान स्व-पर केविवेक से उत्पन्न होता है । हे भव्य आत्माओ । करोडों उपाय करके भी एक बार सम्यग्ज्ञान की उपलब्धि अपने आप में सम्यक् पुरुषार्थ केबल से अवश्य ही कर लो । सारा जीवन सदैव केलिये आनन्दित हो जायेगा । सफल हो जायेगा नर भव का पाना और निगोद राशि से त्रस पर्याय में आना ।

.१३२.

प्रश्न १. धन, समाज, परिजन आदि सच्चे साथी नहीं है क्या ?

उत्तर - लौकिक व्यवहार में धन एवं समाज का अपना महत्व है परन्तु आध्याम्तिक दृष्टि में धन समाज आदि का कोई महत्व नहीं । यह सभी स्वरुप प्राप्ति मे बाधक ही है ।

प्रश्न २. मानव जीवन में ज्ञान का महत्व क्यों है ?

उत्तर - सभी प्रकार की सम्पत्ति तो कुटुम्बी जन बॉट सकते है लुटेरे लूट सकते है, परन्तु ज्ञान एक ऐसी सम्पत्ति है जिसमें न कोई हिस्सेदार है, न चोर आदि का डर है ।

प्रश्न ३. ज्ञान केअभाव में क्या सुख शान्ति संभव है ?

उत्तर - लोकेक्षण में भले ही सब कुछ संभव है, परन्तु सम्यग्ज्ञान केअभाव में कभी भी सुख और शांति संभव नहीं हे ।

प्रश्न ४. मोक्ष मार्ग में ज्ञान उपयोगी है क्या ?

उत्तर - सम्यग्ज्ञान निज-पर भेद विज्ञान बिना नही होता और निज -पर भेद विज्ञान केबिना मोक्ष मार्ग प्रशस्त नही होता । अत: मोक्ष मार्ग में सम्यग्ज्ञान का विशेष महत्व है ।

प्रश्न ५. सम्यग्ज्ञान का प्रमुख कार्य क्या है ?
उत्तर - सम्यग्ज्ञान का प्रमुख कार्य है स्व-पर भेद विज्ञान। जो वस्तु जैसी है उसे उसी प्रकार जानना।

प्रश्न ६. सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति आवश्यक है क्या ?
उत्तर - अगर सच्ची सुख शांति प्राप्त करने की भावना है, तो सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति आवश्यक ही है। क्योंकि सम्यग्ज्ञान के अभाव में आत्म शांति एवं मोक्ष सुख की उपलब्धि संभव ही नहीं है।

.१३३.

विषय चाह एवं सम्यग्ज्ञान का फल

जे पूरव शिव गये, जांहि अब आगे जे है।
सो सब महिमा ज्ञान तनी, मुनिनाथ कहें है ॥
विषय चाह दवदाह, जगत जन अरनि दझावै।
तास उपाय न आन, ज्ञान घन घान बुझवे ॥ ७ ॥

अन्वयार्थ - (जे पूरव शिव गये) जो भव्य जीव पूर्व काल मै मोक्ष गये है (जांहि अरु आगे जै है) वर्त मान में जा रहे है और भविष्य काल में जो मोक्ष को प्राप्त करेंगे (सो सब महिमा ज्ञान तनी) वह सभभ महिमा सम्यग्ज्ञान की है (मुनिनाथ कहे है) ऐसा गण्धरों और आचार्यो ने कहा है(विषय चाह दव दाह) विषय चाह रुपी दावानल अग्नि(जगत जन अरनि दझावै) संसार में मनुष्य रुपी जंगल को जलाति आ रही है (तास उपाय न आन) उस अग्नि को बुझाने का कोई दुसरा उपाय नहीं है(ज्ञान घन घान बुझवै) मात्र ज्ञान रुपी मेघ ही इस विषय रुपी अग्नि को शान्त करने में सक्षम है।

भावार्थ - संसार के स्वरुप का भ ली भांति परिज्ञान करने वाली अनन्त भव्यात्मायें संसार शरीर भोगों से विरक्त सम्यग्ज्ञान रुपी नौका पर आरुढ होकर संसार समुद्र से पार हो चुकी है और अगणित आत्मायें वर्तमान में द्रव्य कर्म, भाव कर्म, नो कर्मो से हमेशा के लिए विमुक्त होकर मोक्ष सुख से युक्त हो रहीं है तथा आगामी काल में जितने भी निजानन्द की अभिलाषी आत्मा मुक्तिबधु कसे अपनी सहचरी

.१३४.

बनायेंगे, वह सभी सम्यग्ज्ञान के बल से ही अपनें मनोरथों को पूर्ण कर पायेंगे, शाश्वत सुखानुभूति का आनन्द अपने जीवन में ले पायेगे।

संसार के दु:खो से छुटकर मोक्ष सुख की प्राप्ति कराने में सम्यग्ज्ञान का महत्व है, ऐसा पूर्वाचार्यो ने प्रतिपादित किया है। जब जगत में विचरण करने वाले मनुष्यों रुपी जूंगल में विषय कषाय रुपी अग्नि भडक उठती है, तब उसे शान्त करने के लिये विश्व में अन्य कोई उपाय नहीं है, मात्र सम्यग्ज्ञान रुपी घनघोर वृष्टि ही सहज में उस विषयाग्नि को शांत करने में सक्षम है।

प्रश्न १. क्या सम्यग्ज्ञान के अभाव में मोक्ष नहीं पा सकते ?
उत्तर - सम्यग्ज्ञान के अभाव में नतो किसी ने मोक्ष प्राप्त किया है, न कर रहा है और न भविष्य में करेगा।

प्रश्न २. शास्त्रों में लिखा है कि अष्ट प्रवचन मात्र का स्वल्प ज्ञान होने पर भी मुनिराज म ोक्ष जा सकते है ?

उत्तर - सम्यग्ज्ञान का मतलब शब्दात्मक श्रुतज्ञान से नही है, निज पर विवेक पुर्वक भेद विज्ञान से है। अष्ट प्रवचन मात्र का यह शब्द ज्ञान है, उनके आत्म ज्ञान में किसी प्रकार की कमी नहीं है।

प्रश्न ३. विषय चाह रुपी अग्नि मनुष्य को कैसे जलाती है?

उत्तर - विषयों की तीव्र चाह ही चिन्ता की गहरी ज्वाला है। जब वह भडक उठती है, तब जीवित मानव को भी जलाकर ध्वस्त कर देती है।

प्रश्न ४. विषय रुपी अग्नि शान्त कैसे हो ?

उत्तर - जंगल में लगी हुई अग्नि को जैसे बरसता हुआ मेघ शांत कर देता है, उसी प्रकार मानव जीवन रुपी जंगल में लगी हुई विषयाग्नि को शान्त करने में सम्यग्ज्ञान रुपी मोघों की वृष्टि ही सक्षम है।

प्रश्न ५. क्या अकेले सम्यग्ज्ञान से सच्चे मोक्ष सुख की प्राप्ति हो जायेगी ?

उत्तर - सम्यग्ज्ञान के साथ में सम्यग्दर्शन और सम्यक्चारित्र इन तीनों की एकता होने पर ही यथार्थ मोक्ष सुख की प्राप्ति होगी, परन्तु सम्यग्ज्ञान के अभाव में दर्शन और चारित्र सम्यक् नहीं होते इसलिए सम्यग्ज्ञान की महिमा कल्पनातीत है।

पुण्य पाप में हर्ष विषाद का निषेध

पुण्य पाप फल मांहिं, हरख विलखौ मत भाई।
यह पुद्गल परजाय, उपजि विनसें थिर नांई ॥
लाख बात की बात यहै, निश्चय उर लाऔ।
तोरि सकल जग दन्द-फन्द, निज आतम ध्याओ ॥ ८ ॥

अन्वयार्थ - (पुण्य पाप फल मांहि) पुण्य पाप के फल के अन्दर (भाई) हे भव्यात्माओ (हरख विलखों मत) हर्ष एवं विषाद मत करो (यह पुद्गल परजाय) यह पुद्गल की पर्याय है (उपजि बनसें)उत्पन्न होकर नष्ट हो जाती है (थिर नांई) स्थिर नहीं है (लाख बात की बात यही निश्चय उर लाओ) लाख बात की यह एक बात अपने हृदय में दृढता के साथ धारण करो(जग सकल दन्द-फन्द तोरी) जगत के समस्त दन्द फन्दों को तोडकर(निज आतम ध्याओ) अपनी आत्मा का ध्यान करो।

भावार्थ - अखिल विश्व में प्राणी मात्र के दोनों कर्मो का उदय देखा जा रहा-है पुण्य और पाप। अज्ञानी जीव पुण्य के उदय में खुशी, आनन्दित रहता है और पाप कर्म के उदय में दुखी, अप्रशन्न, अशान्त रहता है, परन्तु सच्चे सुख की प्राप्ति के इच्छुक भव्यात्माओं को आचार्यो

ने संबोधित करते हुए कहा है कि हे भाई ! यह पुण्य पाप दोनां ही पुद्गल की पर्यायें है, जो उत्पन्न होकर नष्ट होती है स्थिर नहीं रहतीं। इसिलिये सारभूत लाख बात की एक ही बात आचार्यो ने कही है कि जगत के समस्त दन्द फन्दों को तोडकर अपने शुध्दात्मा का ध्यान करो, अपने आप में समाहित हो जाओ। अपने ज्ञायक स्वभाव में समाहित होकर ज्ञानानन्द में निमग्न हो जाओ।

प्रश्न १. पुण्य किसे कहते है ?
उत्तर - जिसके कारण भौतिक सुखों की प्राप्ति हो एवं आत्मा पवित्र हो उसे पुण्य कहते है।

प्रश्न २. पाप किसे कहते है ?
उत्तर - जिसके कारण भौतिक सुख सामग्री की उपलब्धि न हो एवं जो आत्मा का पतन कराये उसे पाप कहते है।

प्रश्न ३. ज्ञानी की दृष्टि में पुण्य पाप का क्या महत्व है ?
उत्तर - भूमिकानुसार ज्ञानी प्रयत्न पूर्वक पुण्य कार्यो में अभिरुचि लेता है परन्तु उसके फल की इच्छा नहीं करता है और प्रयत्न पूर्वक पाप कार्यो से विरक्त रहता है परन्तु पाप कर्म के उदय में विचलित नहीं होता है अर्थात पुण्य और पाप के फल में ज्ञानी को कदापि हर्ष विषाद नहीं होता है।

प्रश्न ४. पुण्य पाप आत्म स्वरुप है क्या ?

उत्तर - पुण्य पाप दोनों पुद्गल की पर्यायें है, आत्म स्वरुप नहीं।

प्रश्न ५. पुण्य पाप स्थाई रहते है क्या ?
उत्तर - पुण्य और पाप शाश्वत स्थायी नहीं रहतें, उदय में आकर समाप्त होजाते है और पुन: भी बन्ध हो जाता है।

प्रश्न ६. पुण्य पाप दोनों समान है क्या ?
उत्तर - पाप की अपेक्षा पुण्य महान है। सम्यग्दृष्टि का पुण्य परम्परा से मोक्ष का कारण भी है परन्तु आध्यात्मिक दृष्टि से दोनों समान है। पुण्य को सोने की तथा पाप को लोहे की बेडी कहा है।

प्रश्न ७. संसार में सार क्या है ?
उत्तर - संसार में रत्नत्रय रुप वीतराग धर्म ही सार है, इसके अतिरिक्त समस्त विषय कषाय एवं कुटुम्बी जन आदि कदली स्तम्भचत् असार ही है।

चरित्र के भेद और अणुव्रते

सम्यग्ज्ञानी होय, बहुरी दिढ चारित लीजै।

एक देश अरु सकल देश, तसु भेद कहीर्ज ॥
त्रस हिंसा को त्याग, वृथा थावर न संहारे।
पर बध -कार कठोर, निन्द नहिं वयन उचारै ॥९ ॥

अन्वयार्थ - (सम्यग्ज्ञानी होय बहुरि दिढ चारित्र लीजै) सम्यग्ज्ञानी होने के अनन्तर स्थिरता पूर्वक चारित्र को ग्रहण करना चाहिये (तसु) उस चारित्र के (एक देश अरु सकल देश) अणुव्रत और महाव्रत इस प्रकार (भेद कहीजै) दो भेद प्रतिपादित किये है (त्रस हिंसा को त्याग) त्रस जीवों की हिंसा का त्याग करके(वृथा थावर न संहारै) बिना प्रयोजन के किसी स्थावर जीव को भी कष्ट नहीं पहुचाना (पर बधकार कठोर निन्द)दुसरों को नष्ट करने वाले, कानों को कठोर लगने वाले, लोक निन्दनीय(वयन नहि उचारें)वचन नही बोलना।

.१३८.

भावार्थ - पच परावर्तन शील संसार मैं अनादिकाल से यह भोला प्राणी अज्ञान अंधाकार में भटकता आ रहा है। सम्यग्ज्ञान के अभाव में कोई भी आत्मा मोक्ष मार्ग का अवलोकन करने में सक्षम नहीं होता। इसलिए अनेकों यातनाओं के अनन्तर भी, जैसे भी, जाहॉ भी, जिस समय भी ज्ञान की उपलब्धि हो, कर लेना चाहिए और सम्यग्ज्ञान के साथ ही अती चारों से रहित सम्यक्चरित्र को ग्रहण कर लेना चाहिए।

सम्यग्ज्ञान के वाद अगर सम्यक्चारित्र जीवन में नहीं आता तो वह सम्यग्ज्ञान वास्तव में सम्यग्ज्ञान नहीं है, शब्द ज्ञान ही कहा जाता है। सम्यग्ज्ञान उसी का नाम है जिसके साथ पद के योग्य चरित्र अर्थात पर वस्तुओं के त्याग, कषायों के त्याग का अविनाभावी सम्बन्ध है।

सम्यक्चरित्र के आचार्यो ने अणुव्रत, महाव्रत के भेद से दो भेद किये है। यहॉ पर अणुव्रतों की कुछ झलक इस प्रकार है। त्रस जीवों की हींसा का त्याग करके, बिना प्रयोजन के किसी भी स्थावर जीव को कष्ट न पहुंचाना अहिंसा अणुव्रत है और किसी भी प्राणीके घातक कठोर, आगम तथा लोक के अनुसार निन्दनीय वचनों को न बोलना यह सत्य अणुव्रत है।

.१३९.

प्रश्न १. सम्यग्ज्ञान के पहले सम्यक्चारित्र नहीं हो सकता क्या ?
उत्तर - सम्यक्चारित्र सम्यग्ज्ञान के साथ होता है पूर्व में नहीं।

प्रश्न २. सम्यग्ज्ञान से पहले सम्यक्चारित्र नहीं हो सकता ?
उत्तर - सम्यग्ज्ञान के बिना हेयोपादेय का ज्ञान संभव नहीं है और हेयोपादेय के ज्ञान के बिना सम्यक्चारित्र का जीवन में आना संभव नहीं है।

प्रश्न ३. चारित्र किसे कहते है ?
उत्तर - हेय वस्तु के त्याग पूर्वक अपने आत्म स्वरुप में आचरण करने को सम्यक् चारित्र कहते है।

प्रश्न ४. सम्यक्चारित्र के भेद है क्या ?
उत्तर - स्वरुप की अपेक्षा सम्यकचारित्र एक ही प्रकार का है, परन्तु पात्रो की अपेक्षा अर्थात श्रावक और मुनिराजों की अपेक्षा दो भेद किये है। परिणामों की अपेक्षा और भी अनेक भेद है।

प्रश्न ५. एक देश चारित्र किसे कहते है ?

उत्तर - आगमानुसार पांचों इन्द्रिय जन्य भोगोपभोगों का एवं पांचों पापों के सामान्य त्याग को एक देश चारित्र कहते है। इसका परिपालन श्रावक करते हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से परिणामों में आंशिक वीतरागता ही एक देश चारित्र है।

प्रश्न ६. सकल चारित्र किसे कहते है ?

उत्तर - आगमानुसार पांचों इन्द्रियों के विषय और पांचों पापों का जिसमें परिपूर्ण त्याग होता है उसे सकल सम्यकचारित्र कहते है। इसका परिपालन संसार, शरीर, भागों से

विरक्त दिगम्बर मुनिराज ही कर पाते है। मुख्यत: आध्यात्मिक दृष्टि से अधिकांश रुपेण आत्म स्वरुप में तन्मयता ही सकल चारित्र है।

प्रश्न ७. अहिंसा किसे कहते है ?

उत्तर - त्रस जीवों का कष्ट नहीं पहुचाते हुए बिना प्रयोजन के स्थावर प्राणियों को भी नही सताना यह अहिंसा अणुव्रत है।

प्रश्न ८. त्रस हिंसा किसे कहते है ?

उत्तर - दो इन्द्रिय से पंचेन्द्रिय पर्यन्त जीवों की कष्ट पहुंचाना त्रस हिंसा है।

प्रश्न ९. स्थावर हिंसा किसे कहते है ?

उत्तर - पृथ्वी जलादि एकेन्द्रिय जीवों को कष्ट पहुंचाना स्थावर हिंसा है।

प्रश्न १०. सत्य अणुव्रत किसे कहते है ?

उत्तर - प्राणियों से प्रा।ण घातक कठार और निन्दनीय वचन नहीं बोलना अर्थात हितमित और प्रिय वचन बोलना, यह सत्य अणुव्रत कहलाता है।

प्रश्न ११. निन्द्य वचन किसे कहते है ?

उत्तर - विषय कषाय एवं छल कपट तथा वासना से युक्त संसार वर्धक वचनों को निन्द्य वचन कहते है।

शेष अणुव्रत और दिग्व्रत

जल मृतिका बिन और, नाहिं कछु गहै अदत्ता।
निज बनिता बिन सकल, नारि सों रहै विरत्ता ॥

अपनी शक्ति विचार, परिग्रह थोरो राखै।
दश दिश गमन प्रमान ठान, तसु सीम न नाखै ॥ १० ॥

अन्वयार्थ - (जल मृतिका बिन) जल और मिटटी के बिना (और कछु अदत्त नाहिं गहै) और कोई भी पर वस्तु बिना दिये, बिना पुछे ग्रहण नहीं करते (निज बनिता बिन) स्व विवाहित धर्म पत्नी के सिवाय (सकल नारि सौ विरत्ता रहै) समस्त नारीयों से विरक्त रहते है। (अपनी शक्ति विचार) अपनी आवश्यकता के अनुसार (परिग्रह थोडो राखै) परिग्रह थोडा सा रख लेते है (दश दिश गमन प्रमाण ठान) दशों दिशाओं में आवागमन का प्रमाण करके (तसु सीम न नाखै)उस प्रमाण की सीमा का उल्लंघन नहीं करते।

भावार्थ - श्रावक की भूमिक में अणुव्रतों क अपना एक विशेष महत्व है। अणुव्रतों के अभाव में श्रावक असंयमी नाम पाता है। सप्त व्यसन सहित अष्ट मूल गुण रहित असंयमी की वृत्ति को आचार्यो ने पशुवत् वृत्ति कह कर शिष्टाचार और मोक्ष मार्ग में उन्हें कोई स्थान प्रदान नही किया है। मुनिराज संसार शरीर भोगों से परिपूर्ण विरक्त है इसिलिजए महाव्रतों का परिपालन करनें में सक्षम है। श्रावक के मन में मोक्ष प्राप्ति की भावना जब लहरा उठती है और इन्द्रिय कषायों से पूर्ण विरक्त नही हो पाता तब वह अणुव्रतियों की श्रृंखला में जुडा रहता है। अहिंसा और सत्य अणुव्रत के साथ अचौर्य अणव्रत की विवेचना करते हुए आयार्चो ने आगम में बताया है कि जल और मिटटी के अतिरिक्त बिना दिये या बिना पूंछे किसी भी प्रकार की वस्तुओं को ग्रहण नहीं करना यह अचौर्य अणव्रत है। स्वरुप आचरण की भावना के साथ अष्टमी

चतुर्दशी एवं विशेष पर्वों में स्व विवाहित धर्मपत्नी के अतिरिक्त समस्त नारियों से विमुख रहना या विरक्त रहतना यह ब्रम्हचर्य अणुव्रत है तथा अपनी आवश्यकता के अनुसार परिग्रह की सीमा बनाकर शेष परिग्रह का त्याग कर उससे दृष्टि मोड लेना परिग्रह परिमाण अणुव्रत है।

अणुव्रतों मुं गुणित रुप से बृध्दि करने वाले ब्रत गुणव्रत कहे गये है, जिनके तीन भेद है। (१) दिग्व्रत (२) देशव्रत (३) अनर्थदण्ड त्यागव्रत। दशें दिशाओं के गमनागमन का प्रमाण करके उसकी सीमा का उल्लघन नहीं करना यह प्रथम दिग्व्रत है।

प्रश्न १. बिना पूछे जल और मिटटी ग्रहण करने पर चोरीं का दोष नहीं लगता क्या ?

उत्तर - सार्वजनिक नही कुआ या जंगल खेत आदि में से जल और मिटटी ग्रहण करने पर श्रावक को चारी का दोष नहीं लगता।

प्रश्न २. किसी के मकान में जाकर बिना पूँछे घडे में से पानी भरना चारी नहीं है क्या ?

उत्तर - किसी के घर में जाकर बिन पुंछे पानी और मिटटी ग्रहण करना चोरी है।

प्रश्न ३. ब्रम्हचर्य अणुव्रत किसे कहते है ?

उत्तर - विशेषत: पर्वो में पूर्ण वासनाओं का त्याग करना और स्व विवाहित धर्म पत्नी के अतिरिक्त सभी से विरक्त रहते हुऐ उन्हें माता बहिन के समान समझना यह ब्रम्हचर्य अणुब्रत है।

प्रश्न ४. परिग्रह परिमाण व्रत किसे कहते है ?

उत्तर - अपनी आवश्यकता से अधिक धन धान्यादि होने पर परिग्रह का त्याग करके सीमा बना लेना परिग्रह प्रमाण अणुव्रत है।

प्रश्न ५. गुणव्रत किसे कहते है ?
उत्तर - पंचाणुव्रतों में वृध्दि करने वाले व्रतों को गुणव्रत कहते है। ये तीन होते है, दिग्व्रत, देशव्रत, अनर्थ दण्ड व्रत।

प्रश्न ६. दिग्व्रत किसे कहते है ?
उत्तर - दशों दिशाओं की मर्यादा करकेसीमा का उल्लंघन न करना दिग्व्रत है।

देश व्रत और अनर्थदण्ड

ताहु में फिर ग्राम, गली गृह बाग बाजारा।
गमानागमन प्रमान ठान, अन सकल निबारा ॥
काहु की धन हानि, किसी जय हार न चिंतै।
देय न सो उपदेश, होय अघ वनज कृषी तै ॥ ११ ॥

अन्वयार्थ - (ताहू में) उस दिग्व्रत में भी (फिर ग्राम गली गृह बाग बाजार) गांव, गली, घर, बाग, बाजार आदि में (गमनागमन प्रमान ठान)गमन और आगमन का प्रमाण करके (अन सकल निबारा)शेष अन्य सभी का परित्याग कर देना चाहिये (काहू की धन हानि) किसी के धन की हानि (किसी जय हान न चिंतै) किसी के हारने या जीतने का चिन्तवन न करें (बनज कृषी तैं) व्यापार और खेति आदि से अनेकों प्रकार के (अघ होय)पाप होते है (सौ) इसलिए खेती, बनिज आदि का (उपदेश न देय) उपदेश नहीं देना चाहिये।

भावार्थ -अणुव्रती भव्य आत्माऐं अहिंसा, सत्य, अचौर्य , बम्हचर्य, परिग्रह परिमाण व्रत को सफल बनाने के लिये गुणव्रतों का पालन करते है इन व्रतों के परिपालन से घोडे से भी अधिक छलांग लगाने वाले मन रुपी घोडे को लगाम लग जाती हे अर्थात असीमित इच्छांये सिमामें बंध जाती है। अनावश्यक्य कार्या करणे की भावना आवश्यक्ता में निहीत हो जाती है। दिशा मर्यादाओं से उसके मन के विकल्प मर्यादित हो जाते है। दशों दिशाओं के अन्दर भी मैं असज अवपे गांव से बाहर नहीं जाऊँगा , बगीचे से बाहर नहीं निकलूँगा अमुक गली व बाजार से बाहर नहीं जाऊँगा, इस मंदिर में या एकान्त स्थान में बैठा रहूंगा ऐसी मर्यादा को देश व्रत कहते है। इससे मोनोवृत्ति इधर-उधर की भाग-दौड से बचकर अपने आप में समाहिहत हो जाती है। किसी की हार जीत का चिन्तवन, भूमि आदि का खोदना, असि, मसि, कृषि आदि का उपदेश, अप्रयोजनीय कार्यो का न करना अनर्थदण्ड से बचना है। इससे स्वाभाविक आत्म प्रयोजनीय कार्य प्रारम्भ हो जाते है।

प्रश्न १. दिशाओं की मर्यादा करने से क्या लाभ है ?
उत्तर - दशों दिशाओं की मर्यादा करने से अमर्यादित ।ित्र सम्बन्धी पापों से बच जाते है।

प्रश्न २. देश व्रत से क्या लाभ है ?
उत्तर - देश व्रत में दिशाओं की मर्यादा को भी संकुचित कर दिया जाता है,जिससे मन के विकल्प मर्यादा केअन्दर समाहित हो जाते है।

प्रश्न ३. अनर्थ दण्ड के त्याग से क्या लाभ है ?

उत्तर - अनर्थ दण्ड का त्याग करने से अहिंसा व्रत पालन में वृध्दि होती है और अप्रयोजनीय कार्यो से विरक्ति होती है ।

.१४५.

प्रश्न ४. किसी का धन समाप्त हो या हार हो ऐसा चिन्तवन करने से क्या हानि है ?

उत्तर - दूसरों की धन हानि या हार हो ऐसा चिन्तवन करने से उसकी हार या धन हानि हो या नाहो परन्तु अपने पाप कर्म का बंध निश्चित है ।

प्रश्न ५. किसी की जीत चिन्तवन से क्या हानि है ?

उत्तर - किसी की जीत के भाव अपने मन में लाओगे तो किसी के हराने की भावना भी मन में निश्चित बनेगी और ये दोनों भवनायें राग-द्वेष के रुपान्तर है । अत: आत्मोत्थान में बाधक ही है ।

अनर्थ दण्ड क भेद

कर प्रमाद जल भूमि, वृक्ष पावक न विराधै ।
असि धनु हल हिंसोपकरण, नहिं दे यश लाधै ॥
राग-द्वेष करतार, कथा कवहूं न सुनी जे ।
औरहु अनरथ दंड, हेतु अघ तिन्हैं न कीजे ॥ १२ ॥

अन्वयार्थ - (कर प्रमाद) प्रमाद कर (भूमी जल पावक वृक्ष न विरोधे) पृथ्वी कायिक, जल कायिक, अग्नि कायिक और वनस्पति कायिक जीवों का घात नहीं करना चाहिये (असि धनु हल) तलवार, धनुष, हल आदि (हिंसोपकरण) जो हिंसा के उपकरण है (यश लाधें नहिं दे) यश की प्राप्ति के लिए किसी को नहीं देना चाहिये (राग - द्वेष करतार कथा) राग-द्वेष को उत्पन्न करने वाली कथा (कबहु न सुनी जे) कभी भी नहीं सुनना चाहिए (औरहु अनरथ दंड आपके हेतु) और भी अनेकों प्रकारके अनर्थ दण्ड जो पापों के कारण है (तिन्हें न कीजे) उन की कभी नहीं करना चाहिये ।

.१४६.

भावार्थ - प्रमाद के वशीभूत होकर अप्रयोजनीय अनेकों कर्मो को बिना बिचारे ही सहज भाव से अज्ञानी करता चला जा रहा है । कभी बैठा-बैठा लकडी तोडता रहता है, तो कभभ लकडी ये जमीन खोदता रहता है , कभी -कभी चलता चलता फूल पत्ती को तोडता जाता है, तो कभी व्यर्थ में ही पानी की उछालता रहता है । क्या कर रहे हो ? पूंछने पर कुछ नहीं उत्तर के साथ सावधान होकर बैठ जाता है इससे लगता है कि प्रमाद अवस्था अज्ञानता की सहेली है, अनर्थो का द्वारा है, पापों की खानि है । ज्ञानी आत्माओं को प्रमाद से परिपूर्ण होने वाला अनर्थ दण्ड कभी भी नहीं करना चाहिए ।

कभी ख्याति लाभ की भावना से बन्दुक, तलवार, हल, चाकू, छुरी आदि उपकरण दूसरों की देकर पप का भागी बन जाताहै । कभी कभी राग,द्वेष को बढाने वाली स्त्री आदि चार विकथाओं में रस लेकर पाप का बन्ध करता चला जाता है । इस प्रकार अनन्तो अप्रयोजनीय कार्य करता हुआ पापों का संचय करता रहता है । आचार्यो ने भव्य जीवों को संबोधन करते हुए

कहा है कि अनर्थ दण्ड पाप से सर्वथा विमुक्त रहना चाहिये, तभी अप्रमत्त दशा के माध्यम से अवरणीय अनन्त गुणों की उपलब्धि कर पायेंगे अपने आप में ।

प्रश्न १. प्रमाद किसे कहते है और वे कितने है ?
उत्तर - अच्छे कार्यो में अनादर का होना प्रमाद है । ४ विकथा, ४ कषाय, ५ इन्द्रिय, निद्रा और स्नेह इस प्रकार प्रमाद के १५ भेद है ।

.१४७.

प्रश्न २. अनर्थ दण्ड किसे कहते है ?
उत्तर - अप्रयोजनीय पाप वर्धक कार्यो को अनर्थ दण्ड कहते है ।

प्रश्न ३. प्रमाद से क्या हानि है ?
उत्तर - प्रमाद के साथ किसी भी जीव का घात होने पर हिंसा का दोष लगता है । अत: प्रमाद ही जीव को हिंसक या पापी बनाता है ।

प्रश्न ४. जल, भूमि आदि में भी जीव है क्या ?
उत्तर - पृथ्वी , जल, अग्नि, वायु और वनस्पति ये सभी एक इन्द्रिय जीव है, ऐसा आचार्यो ने कहा है ।

प्रश्न ५. भौतिक विज्ञान के अनुसार भी स्थावरों में जीव है क्या ?
उत्तर - वर्तमान में वैज्ञानिकों ने भी अनेकों प्रयोगों द्वारा यह सिध्द कर दिया है कि वनस्पती, जल आदि सभी स्थावरों में एक नहीं अगणित जीवों का अस्तित्व है ।

प्रश्न ६. अपने मित्र या पडोसियों को हिंसा के उपकरण देने में क्या दोष है ?
उत्तर - आपके पास से हिंसा के उपकरण ले जाकर आपके मित्र या पडोसी उनसे जो हिंसा करेंगे उस पाप का बहु भाग आपको भी मिलेगा । अत: हिंसा के उपकरण किसी को मांगने पर भी नहीं देना चाहिये ।

प्रश्न ७. विकथा क्यों नहीं सुनना चाहिये ?
उत्तर - विकथायें सुनने में या करने में समय व्यर्थ चला जाता है और राग-द्वेष की वृध्दि होती है, दुर्गति का बंध होता है इसलिए विकथाओं में समय नहीं गंवाना चाहिये ।

.१४८.

प्रश्न ८. पाप बंध किन-किन क्रियाओं से होता है ?
उत्तर - पर निन्दा, चुली किसी के पतन की भावना, किसी को धोखा देने की भावना, किसी के अशुभ कर्म को उदय में दु:खी देखकर प्रसन्न होना आदि अनेकों कुत्सित भावन ।ओ से पाप कर्म का बंध हो जाता है ।

शिक्षा व्रतों का स्वरुप

धरउर समता भाव, सदा सामायिक करिये ।

परब चतुष्टय महिं, पाप तजि प्रोषध धरियें ॥
भोग और उपभोग, नियम करि ममत निवारे ।
मुनि को भोजन देय, फेर निज करहि अहारे ॥ १३ ॥

अन्वयार्थ - (धर उर समता भाव) अपने हृदय में समता भाव धारण करके (सदा सामायिक करिये) सदा सामायिक करना चाहिये (परब चतुष्टय माहिं) महिने केअन्दर आने वाली दोनों अष्टमी एवं दोनों चतुर्दशी के दिन (पाप ताज)पाप कार्यो का त्याग करके (प्रोषध धरिये) प्रोषधोपवास करना चाहिये(भोग और उपभोग) भोग और उपभोग की वस्तुओं की (नियम कर) मर्यादा बनाकर (ममत निवारे)शेष वस्तुओं से ममत्व छोड देना चाहिए (मुनि को भोजन देय) मुनिराज को आहार देकर(फेर निज करहिं अहारें) उसकेबाद स्वयं आहार करना चाहिये ।

भावार्थ - मोह, ममता, राग-द्वेष की वृध्दि आदि दुर्भावनाओं में अनादि काल से समय व्यतीत होता जा रहा है । फलत: ।ाण भर केलिये भी शान्ति की लहर नहीं मिल पा रही है । चारों गतियों में दर-दर की ठोकर चिरकाल से खाते चले आ रहे है । करुणानिधि हमारे पूज्य पाद आचार्यो ने आत्म शान्ति का उपाय चार शिक्षा व्रतों की

विवेचना करते हुये बताया है कि अपने हृदय में समता भाव को धारण करके सदैव अर्थात त्रिकाल सामायिक करना चाहिये । आत्म स्वभाव में विलीन होने केलिये अष्टमी, चतुर्दशी पर्वो में सभा आरम्भ और परिग्रह रुप पाप कार्यो को छोडकर प्रोषधोपवास करना चाहिये । भोगोपभोग की वस्तुओं की आवश्यकतानुसार सीमा बनाकर शेष सभी का विमोचन कर देना चाहिये और प्रात: देप पूजा केअनघ्न्तर शुध्द आहार बनाकर नवधा भक्ति पूर्वक मुनिराज को आहार कराकर तदनन्तर स्वयं आहार करना, यह चारों शिक्षा व्रत है । इनसे निरन्तर मोक्ष मार्ग पर बढने की शिक्षा प्राप्त होती है ।

प्रश्न १. शिक्षा व्रत किसे कहते है ?
उत्तर - अणुव्रत एवं गुणव्रतों केसाथ जिनसे महाव्रत धारण करने की प्रेरणा जाग्रत हो उन्हे शिक्षाव्रत कहते है ।

प्रश्न २. शिक्षा व्रत कितने होते है ?
उत्तर - शिक्षाव्रत चार होते है ।
सामायिक, २. प्रोषधेपवास, ३. भोगोपभोग परिमाण, ४. अतिथि संविभाग ।

प्रश्न ३. सामायिक किसे कहते है ?
उत्तर - आधि, व्याधि, उपाधियों से परे होकर आत्म स्वरुप में लीन होने को सामायिक कहते है ।

प्रश्न ४. प्रोषधोपवास किसे कहते है ?
उत्तर - विषय कषाय एवं समस्त लौकिक कार्यो से विराम लेकर चारों प्रकार केआहार का संकल्प पूर्वक परित्याग करना प्रोषधोपवास कहलाता है ।

प्रश्न ५. प्रोषधोपवास कितने प्रकार का है ?

उत्तर - उत्तम, मध्यम, जघन्य केभेद से प्रोषधोपवास तीन प्रकार का है।

प्रश्न ६. उत्कृष्ट प्रोषधोपवास किसे कहते है ?

उत्तर - अष्टमी और चतुर्दशी केदिन उपवास सप्तमी और नवमीं एवं त्रयोदशी तथा पूर्णिमा केदिन एकासन करने को उत्कृष्ट प्रोषधोपवास कहते है।

प्रश्न ७. मध्यम प्रोषधोपवास किसे कहते है ?

उत्तर - अष्टमी चतुर्दशी आदि पर्वो में निर्जला उपवान करने को मध्यम प्रोषोधोपवास कहते है।

प्रश्न ८. जघन्य प्रोषधोपवास किसे कहते है ?

उत्तर - पर्वो के दिनों मे एकासना करने को या पूर्वापर तीनों दिनीं में एकासन करने को जघन्य प्रोषधोपवास कहते है।

प्रश्न ९. भोगोपभोग परिमाण व्रत किसे कहते है ?

उत्तर - भोग और उपभोग की वस्तुओं में आवश्यकतानुसार मर्यादा करके शेष वस्तुओं का परित्याग कर देना भोगोपभोग परिमाण व्रत है।

प्रश्न १०. भोग किसे कहते है ?

उत्तर - जो वस्तु एक बार प्रयोग में आती है उसे भोग कहते है जैसे-भोजन आदि।

प्रश्न ११. उपभोग किसे कहते है ?

उत्तर - जो वस्तु पुन: पुन: उपभोग में आती है उसे उपभोग कहते है, जैसे- वस्त्रादि।

प्रश्न १२. अतिथि संविभाग शिक्षा ब्रत किसे कहते है ?

उत्तर - मुनिराज,ऐलक, ।ुल्लक, आर्यिका, त्यागी ब्रतियों का यथावत भक्त पूर्वक आहारादि देना यह अतिथ्ी संविभाग शिक्षाव्रत है।

निरतिचार श्रावक व्रत और समाधिमरण का फल

बारह व्रत केअतिचार, पन-पन न लगावे।
मरण समय सन्यास धारि, तसु दोष नशावे ॥
यों श्रावक व्रत पाल, स्वर्ग सोलम उपजावे।
तहॅ तैं चय नर जन्म पाय, मुनि ह्वै शिव जावे ॥ १४ ॥

अन्वयार्थ - (बारह व्रत के) बारह व्रत के(पन पन अतिचार) पांच पांच अतिचार है, उन्हें (न नलगावे) नहीं लगाना चाहिए, अर्थात अतिचारों से रहित व्रतों का पालन करना चाहिए (मरण समय) मरण के समय (सन्यास धार) समाधि लेकर सभभ प्रकार के आरम्भ परिग्रह का त्याग करके (तसु दोष नशावे) उस समाधि मरण ें लगने वाले जीवप मरण ।ोभ आदि दोषों को समाप्त कर देता है (यों श्रावक व्रत पाल) इस प्रकार श्रावक के व्रत पालकर (स्वर्ग सोलम उपजावे) सोजहहवे स्वर्ग में उत्पन्न होता हे (तॅह तै चय) वहॉ से आकर(नर जन्म पाय) मनुष्य जन्म को प्राप्त करके (मुनि ह्वै) दिगम्बर मुनि बन कर (शिव जावे) मोक्ष सुख को प्राप्त कर लेते है ।

भावार्थ - अविरत अवस्था में अभक्ष्य का सेवन करने वाले बहुसंख्यक अज्ञानी प्राणी उसी में आनन्द मानते चले आ रहे है । कुछ भव्यात्मा अणुव्रतों का पालन तो करते है, परन्तु अतिचारों से नहीं बच पाते । हमारे पूर्वाचार्यो ने कहा है कि मोक्ष के प्रेमी अणुब्रति सभी भव्यात्मा इन बारह व्रतों में लगने वाले पांच पांच अतिचारों से सर्वथा मुक्त रहे और समाधि मरण के समय सभी आरम्भ परिग्रह एवं जन्म-मरण आदि

की चिन्ताओं को छोडकर निर्दोष समाधि करके सोजहवे स्वर्ग में उत्पन्न हो २२ सागर पर्यन्त स्वर्गो के सुख भोगकर मानव पर्याय में आकर दिगम्बर मुंनि बनकर भेद विज्ञान के बल से ।ापक श्रेण्ी मांडकर केवलज्ञान की प्राप्ति करते हुए मोक्ष सुख में विलीन हो जाते है ।

प्रश्न १. व्रत किसे कहते है ?

उत्तर - १. विषय कषायों से विरक्ति ही व्रत है, या इन्द्रिय लम्पटता के परित्याग को व्रत कहते है ।

संसार शरीर भोगों से विरक्ति एवं स्वरुप में अनुरक्ति को व्रत कहते है ।

देव शास्त्र गुरु की साक्षी पूर्वक मोक्षमार्ग के अनुरुप ग्रहण किये हुए नियम को भी व्रत कहते है ।

प्रश्न २. व्रत कितने होते है ?

उत्तर - व्रत बारह होते है । ५ अणुब्रत ३. गुणव्रत ४. शिक्षाव्रत ।

प्रश्न ३. अतिचार किसे कहते है ?

उत्तर - जो व्रतों को मुलत: घात न कर सके परन्तु सदोष बना दे उसे अतिचार कहते है ।

प्रश्न ४. क्या व्रत में अविचार लगाना चाहिए ?

उत्तर - व्रतों में किञ्चित मात्र भी अचिार नहीं लगने देना चाहिये । कदाचित प्रमादवश लग भी जाये तो गुरुसे प्रायश्यित लेकर निरतिचार व्रतों का परिपालन करना चाहिये ।

प्रश्न ५. अतिचार कितने होते है ?

उत्तर - प्रत्येक व्रत के पांच-पांच अतिचार होते है ।

प्रश्न ६. सन्यास किसे कहते है ?

उत्तर - संसार शरीर भोगों से विरक्त होकर रत्नत्रय पूर्वक समाधि मरण को तैयारी को सन्यास कहते है।

प्रश्न ७. श्रावक किसे कहते है ?

उत्तर - श्रध्दावान, विवेकवान एवं क्रियावान सम्यग्दृष्टि भव्य आत्मा को श्रावक कहते है।

प्रश्न ८. बारह व्रतों का पालन करने वाला कहॉ तक जाता है ?

उत्तर - बारह व्रतो का पालन करने वाला सोलहवे स्वर्ग तक जाता है।

प्रश्न ९. बारह व्रतो का पालन करने का फल सोलहवे स्वर्ग पर्यन्त ही है क्या ?

उत्तर - बारह ब्रतों का पालन करके सोलहवें स्वर्ग तक जाने वाला भव्यात्मा देव पर्याय के अनन्तर मनुष्य भव में दिगम्बर मुनि बन मोक्ष फल को भी प्राप्त करता है। अत: अणुब्रत परिपाल न का फल परम्परा से मोक्ष सुख की प्राप्ति भी है।

प्रश्न १०. श्रावक अवस्था में भी समाधिमरण किया जा सकता है क्या ?

उत्तर - उत्कृष्ट रुप से समाधि परम दिगम्बर मुनिराज ही करते है, परन्तु सामान्यतया मोह मिथ्यात्व का वमन करने वाला श्रावक भी साधना पूर्वक समाधिमरण कर सकता है।

चतुर्थ ढाल का सारांश

श्री पण्डित दौलतराम जी ने इस ढाल में सम्यग्दृष्टि जीव को सम्यग्ज्ञान का उपयोग चारित्र की दृढता में लगाने की प्रेरणा देते हुए सम्यग्ज्ञान के भैद गरिमा आदि बताकर देश चारित्र रुप श्रावक धर्म का प्रतिपादन किया है। श्रावक को अपनी दिनचर्या सदैव समता सिहित निर्लोभ रुप से परिपूर्ण बारह ब्रतों का पालन करते हुये आदर्श जीवन बनाना चाहिये, ताकि मरणान्तिक दशा में निर्ग्रन्थ धर्म स्वीकार कर सम्यक् मोक्ष मार्ग बन सके। मोक्ष की जड मनुष्य पर्याय की सार्थकता सम्यग्दर्शन पूर्वक आत्म ज्ञान के साथ सम्यक् चारित्र ही है, जो एक देश श्रावक दशा में बारह ब्रताचारण रुप होता है तथा परिपूर्ण् मुनिदशा में शुध्दोपयोग के साथ सकल संयम रुप होता है। देशब्रती श्रावक सोलहवे स्वर्ग तक जन्म पाता है और वहॉ से आयु ।ाय कर पुन: मनुष्य पर्याय पाकर निर्ग्रन्थपना स्वीकार कर निर्वाण पाता है।

---

* पांचवी ढाल *

द्वादश भावन भायकर , भव्य गये भव पार।
भाव भव्य बर्णन करुं, मिले मुक्ति का प्यार ॥

सौभाग्यशाली मुनिराज का कर्त्तव्य

मुनि सकलव्रती बडभागी, भव - भोगनतै बैरागी।
बैराग्य उपावन माई, चिन्तै अनुप्रेक्षा भाई ॥ १ ॥

अन्वयार्थ - (मुनि सकल ब्रती बडभागी) मुनिराज महाव्रती परम सौभाग्यशाली है (भव भोगनतै वैरागी) जो संसार के सभी भोगों से विरक्त रहते है (वैराग्य उपावन माई) वैराग्य (समता रुपी पूत्र) को उत्पन्न करने के लिए (माई) माता के समान है (भाई) हे भव्य प्राणियों (अनुप्रेक्षा चिन्तैं)(इस प्रकार की द्वादश) भावना का मुनिराज चिन्तवन करते है।

भावार्थ - महाव्रतों की महिमा अखिल विश्व में हर प्राणी के मन में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किये हुये है। महाव्रतों को अंगीकार करना सामान्य पुरुष के हाथ की बात नहीं है। महाव्रतों को धारण और पालन करने वाले सौभाग्य शाली महापुरुष ही होते है।
जैसे- सिंहनी का दुध स्वर्ण पात्र में ही रुकते है, इसी प्रकार महाव्रतों को सौभाग्यशाली पुरुषार्थी महापुरुष ही धारण कर पाते है। महाव्रती मुनिराज संसार शरीर भोगों से राग-द्वेष, काम, क्रोध्, आदि कषायों से मोह, लोभ, ।ोभ आदि सभी कुविकारों से सर्वथा विरक्त रहते है तथा समता के साथ वैराग्य उत्पन्न करने वाली मातृत्व भाव में द्रवित बारह भावनाओं का निरन्तर चिन्तवन करते रहते है।

.१५६.

प्रश्न १. मुनिराज कैसे होते है ?
उत्तर - मुनिराज संसार, शरीर एवं भोगों सं पूर्णत: विरक्त रहते है।

प्रश्न २. मुनिराजों को सकल व्रती क्यों कहा जाता है ?
उत्तर - हिंसादि पापों का सर्वथा त्याग होने से एवं संसार शरीर भागों से परिपुर्ण विरक्त होने से मुनिराज सकलब्रती कहे जाते है।

प्रश्न ३. मुनिराजों कों बडभागी क्यों कहा है ?
उत्तर - सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र रुपी रत्नों की प्राप्ति सामान्य लोगों को नहीं होती, निकट द्रव्य विशेष पुण्यशाली आत्माओं को ही होती है। अत: रत्नत्रय निधि के कारण मुनिराजों को विशेष भाग्यशाली कहा है।

प्रश्न ४. अनुप्रक्षा किसे कहते है और वे कितनी है ?
उत्तर - संसार, शरीर, भोगों से विरक्त आत्म स्वरुप के पुन: पुन: चिन्तवन को अनुप्रेक्षा कहते है।

उनके द्वादश नाम निम्न प्रकार है इ

अनित्य (२) अशरण (३) संसार (४) एकत्व (५) अन्यत्व (६) अशुचि (७) आस्त्रव (८) संवर (९) निर्जरा (१०) लोक (११) बोधिदुर्लभ (१२)धर्म।

द्वादश अनुप्रक्षाओं का फल

इनचिन्तत सम सुख जागे, जिमि ज्वलन पवन के लागे।

जब ही जिय आतम जाने, तब ही जिय शिव सुख ठाने ॥ २ ॥

.१५७.

अन्वयार्थ - (इन चिन्तत) इन द्वादश अनुप्रेक्षओं के चिन्तवन से(सम सुख जागे) समता रुपी सुख जाग्रत हो जाता है (जिमि) जिस प्रकार (पवन के लागे ज्वलन) हवा के लगने से अग्नि भडक उठती है (जब ही जिय) जिस समय यह जीव(आतम जाने) आत्मा को जानता है (तब ही जिय) उसी समय यह जीव (शिव सुख ठाने) मोक्ष सुख की प्राप्ति का स्थान प्राप्त कर लेता है।

भावार्थ - बारह भावनाओं की महिमा कौन नहीं जागता। एक-एक भावना के चिन्तवन से अनादि काल से संसार दल-दल में फँसा हुआ आत्मा सहज में ऊपर की और उठता चला आता है। संसार की स्थिती मन पटल पर हेय रुप में अंकित हो जाती है। संवर, निर्जरा, बोधिदुर्लभ और धर्म भझवनायें मोह।ोभ को परास्त कर सच्चे समता सुख को जगाने में उस प्रकार निमित्त बन जाती है जिस प्रकार तीव्र हवा के चलने पर अग्नि भडक उठती है। जिस समय यह भव्य प्राणी अपने शुध्दात्म स्वरुप को जानता है, उसी समय यह मोक्ष सुख प्राप्ति के लिए कटिबध्द हो जाता है। बारह भावनाओं के चिन्तवन से गुणदोषों की पहिचान।ण -भर में हो जाती है। सारे के सारे दोसों को मुनिराज तिलात्र्जलि देकर सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र आदि गुणो में हमेशा के लिये लीन हो जाते है।

प्रश्न १. भावना किसे कहते है ?

उत्तर - बार-बार संसार, शरीर अर्थात भव समुद्र से पार होने क। चिन्तवन करने को भावना कहते है।

.१५८.

प्रश्न २. बारह भावनाओं क चिन्तवन से क्या लाभ है ?

उत्तर - बारह भावनाओं के चिन्तवन से समता सुख की उपलब्धि होती है, वेश्राग्य में वृध्दि होती है और रत्नत्रय की उपलब्धि के साथ परम्परा से मोक्ष सुख की प्राप्ति होती है।

प्रश्न ३. बारह भावनाओं का चिन्तवन श्रावक नहीं कर सकते क्या ?

उत्तर - बारह भावनाओं का चिन्तवन श्रावक अवस्था में भी उपयोगी है, परन्तु उने चिन्तवन का पूर्ण फल मुनि अवस्था में ही प्राप्त होता है।

प्रश्न ४. सम सुख किसे कहते है ?

उत्तर - मोह एवं।ोभ के अभाव में उत्पन्न आत्मीय आनन्द को समसुख कहते है।

प्रश्न ५. शिव सुख की प्राप्ति कब होगी ?

उत्तर - नय एवं प्रमाण से यथार्थ आत्म स्वरुप को जान लेने पर ही शिव सुख की प्राप्ति होगी।